

# श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजन

रचयिता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन

(स्थापना)

(छंद रोला)

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।  
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थकर पावन ।  
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।  
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

(दोहा)

मेरे मनमंदिर बसो, देव सुपारसनाथ ।  
निकट आपके मैं रहूँ, आप रहो मम साथ ।

(छंद भुजंगप्रयात)

परिणाम पावन विमल हो अमल हो ।  
जनम ना मरण हो ना मोहादि मल हो ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
चरण में धरें जल शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवान्तक जिनेश्वर हो सन्ताप हारी ।  
करो मेरी शीतल ये पर्याय सारी ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
मलय धर चरण में शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणिक भाव में कर समर्पण निरंतर ।  
मरण को उपाया अमर को बिसर कर ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
चरण धर ये अक्षत शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निजातम में रत हो रति को निवारा ।  
चिदातम का उपवन है सुरभित तुम्हारा ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
चरण पुष्प अर्पण शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परिपूर्ण हूँ मैं कभी यह न माना ।  
अतः कामना थी सदा पर को पाना ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
चरण धर ये व्यंजन शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल लोक आलोक तेरी प्रभा से ।  
प्रभो अज्ञ हूँ ना स्वपर भेद भासे ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
चरण दीप धर कर शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बना कर्म ईंधन अनल ध्यान दहकर ।  
सदन-चित् सुवासित किया निज में रहकर ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
चरण धर अगर को शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

किया आत्म-साधन लिया मुक्तिथल को ।  
लहूँ आप जैसा प्रभु कब मैं फल को ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
दिविफल चरण धर शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अमोलक है वैभव जिनेश्वर तुम्हारा ।  
तुम्हे लख लखाता निजातम हमारा ।  
करें नित्य अर्चन सुपारस प्रभु का ।  
निधि जग चरण धर शरण लें विभु का ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### पंचकल्याणक अर्घ्य

(धत्तानंद)

तीर्थकर वंदें नित अभिनंदें, पद अरविंदे शीश धरें ।  
पांचों कल्याणक समकित दायक, मोद बधायक भक्ति करें ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद - गीतिका)

भाद्रपद सित षष्ठी को रे, स्वप्न षोडश मां लखे ।  
फल जानने को प्रश्न राजा, सुप्रतिष्ठ निकट रखे ।  
पृथ्वी तुम माता बनोगी, भव्य तीरथ नाथ की ।  
सुन, हर्ष-धुनि माता सहित सुर-मनुज सबने साथ की ।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीस्पाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंपित हुआ रे इन्द्र आसन, लोकत्रय हर्षित सभी ।  
शुभ द्वादशी सुद ज्येष्ठ की, जन्मे सुपारस थे तभी ।  
सौधर्म शचि सुर नार-नर, उत्सव प्रभु की स्पर्शना ।  
अभिषेक पांडुक नृत्य तांडव, सहस लोचन दर्शना ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंपित हुआ रे राग जब, वैराग्य वर्धित भावना ।  
था जन्म का उत्सव अरे, उत्सव मना वन आंगना ।  
तब इंद्र आए देव आए, ब्रह्म ऋषि अनुमोदने ।  
रे भव्य नर वैराग्य धर कानन बसे साधक बने ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौरुष सुपारस का कहें, या भाग्य भविजन का अरे ।  
रे दिव्य वाणी जग लहे, कैवल्य जब जिनवर वरें ।  
कृष्ण फाल्गुन षष्ठ को शठ कर्म-घाति घात कर ।  
सब दोष अष्टादश तजे अरहंत पद को प्राप्त कर ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु सिद्ध बन सप्तम जिनेश्वर, सप्तमी फाल्गुन वदी ।  
सम्मोद से सम श्रेणी में जा, पा गए पंचमगति ।  
ऊर्ध्व रख ध्रुव आतमा को, ऊर्ध्व गति पाई प्रभो ।  
लख आपकी रे शुद्धता, परिशुद्धता भाई विभो ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीसुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

### जयमाला

(दोहा)

श्री सुपाश्वर्च जिनराज की, महिमा अगम अपार ।  
गुणमाला गावें प्रभो, होवें भव से पार ॥

(छंद चौपाई)

जय जिनदेव सुपारस स्वामी, जय तीर्थकर त्रिभुवन नामी ।  
जय शत इन्द्र नमें शिरनामी, जय मुनिवृंद जजें पथगामी ॥  
जय अनंत दरशन बल धारी, जय सुख ज्ञान लह्यो अविकारी ।  
जय जय दिव्य ध्वनि के दाता, जय श्रुत वाग्मय मूल प्रदाता ॥  
जय रत्नत्रय पथ के दायक, जय जय सम्यक ज्ञान प्रदायक ।  
हे प्रभु ज्ञान दिया जो तुमने, द्रव्य भाव श्रुतधर आगम ने ॥

जड़तन-चेतन राग-ज्ञान से, भिन्न दिखाए भेद भान से ।  
भेदज्ञान से आत्मज्ञान हो, निज अनुभव सत्यार्थ भान हो ॥

ज्ञान तभी सम्यक पद पावे, ज्ञान प्रमाण तभी कहलावे ।  
मति-श्रुत सुमति-सुश्रुत कहलावे, अवधि मनपर्यय सत् गावे ॥

ये लघु ज्ञान बीज केवल के, निज वैभव इनमें सब झलके ।  
जो श्रुत से शुद्धातम जाने, सो जिनशासन सकल पिछाने ॥

श्रुतकेवली निश्चय कहलावे, यों जिन आगम में यश पावे ।  
पूर्णभाव को लक्ष्य बनावे, संशय विभ्रम मोह पलावे ॥

ज्ञानमात्र आश्रव क्षय कारण, ज्ञानभाव से बंध विदारण ।  
ज्ञान बिना थिरता नही आवे, ज्ञान विराग जुदा नही पावे ॥

ज्ञान बिना जो कीनी करनी, अर्थ हीन आगम में वरनी ।  
ज्ञायक ज्ञेय ज्ञान बन जावे, सब करनी शिवपथ पर धावे ॥

ज्ञान भवोदधि पार उतारे, ज्ञान भाव शिव साधनहारे ।  
यों उपदेश ज्ञान ज्ञायक का, दे उपकार किया सब जग का ॥

भेदज्ञान विधि से हे स्वामी, पार हुए शिवपुर विश्रामी ।  
निजानंद रस लीन रहो तुम, ज्ञायक ज्ञेय सकल के हो तुम ॥

हे जिनदेव सुपारस स्वामी, मैं भी तेरा बन अनुगामी ।  
ज्ञानमात्र में थिर हो जाऊं, तुम सम सिद्ध स्वपद को पाऊं ॥

(धत्तानंद)

तीर्थकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो ।

तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

ज्ञान भाव तन्मय अहो, देव सुपार्श्व जिनेश ।

ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता विषे, अंतर रहे न शेष ।

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।